2/3

न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते।
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति।।४।।

न=न; **कर्मणाम्**=स्वधर्म के; **अनारम्भात्**=न करने से; **नैष्कर्म्यम्**=कर्म-बन्धन से मुक्ति को; **पुरुषः**=मनुष्य; **अश्नुते**=प्राप्त होता है; **न**=न; **च**=तथा; **सन्यसनात्**=संन्यास द्वारा; **एव**=ही; **सिद्धिम्**=कृतार्थता को; **समधिगच्छति**=प्राप्त होता।

अनुवाद

केवल कर्म न करने से ही कर्मबन्धन से मुक्ति नहीं हो जाती और न ही केवल संन्यास से कृतार्थता होती है।।४।।

तात्पर्य

विषयी मनुष्यों के हृदय को शुद्ध करने के लिए जिन स्वधर्मरूप कर्मों का विधान किया गया है, उनके द्वारा शुद्ध हुआ मनुष्य ही संन्यासाश्रम ग्रहण करे। शुद्धिकरण के बिना अकस्मात् संन्यासाश्रम ग्रहण कर लेने से कल्याण नहीं होता। ज्ञानी दार्शनिकों के अनुसार संन्यास ग्रहण करने, अर्थात् सकाम कर्मों का निवर्तन कर देने मात्र से नारायणत्व की प्राप्ति हो जाती है। भगवान् श्रीकृष्ण इस मत का अनुमोदन नहीं करते। हृदय-शुद्धि से पूर्व लिया गया संन्यास सामाजिक व्यवस्था में उत्पातकारी ही सिद्ध होता है। दूसरी ओर, यदि कोई स्वधर्म की उपेक्षापूर्वक भगवद्भक्ति में तत्पर हो जाय तो उस दिशा में वह जो कुछ भी साधन (बुद्धियोग) करता है, प्रभु उसे सोल्लास स्वीकार कर लेते हैं। **स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्**— 'इस धर्म का अल्प सा साधन भी महान् भय से रक्षा कर लेता है।'

2/3

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।।५।।

न=नहीं; **हि**=निस्सन्देह; **कश्चित्**=कोई भी; **क्षणम्**=क्षणमात्र; **अपि**=भी; **जातु**=किसी काल में; **तिष्ठति**=रहता है; **अकर्मकृत्**=बिना कर्म किए; **कार्यते**=करता है; **हि**=निस्सन्देह; **अवशः**=विवश हुआ; **कर्म**=कर्म; **सर्वः**=सब; **प्रकृतिजैः**=प्रकृति से उत्पन्न; **गुणैः**=गुणों द्वारा।

अनुवाद

सब मनुष्य प्रकृति के गुणों की प्रेरणा के अनुसार परवश हुए कर्म करते हैं। इसलिए कोई भी क्षणमात्र के लिए भी कर्म किए बिना नहीं रह सकता।।५।।

तात्पर्य

आत्मा की सक्रियता का बद्ध जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं, वह तो स्वभाव से ही नित्य क्रियाशील है। आत्मा की उपस्थिति के बिना प्राकृत कलेवर कुछ भी चेष्टा नहीं कर सकता। देह तो एक चेतनाशून्य वाहनमात्र है, जिसे नित्य क्रियाशील आत्मा क्रियान्वित रखता है। अतएव आत्मा के लिए कृष्णभावनाभावित सत्कर्मों के परायण